शोध मंथन Vol. XII No.II April-June 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.354 (SJIF)

भारतीय सामुद्रिक क्षेत्रों की सुरक्षा व एशियाई तालमेल

प्राप्तिः 22.05.2021
स्वीकृतः 15.06.2021

डॉ0 माया गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग,
बी0डी0एम0 मु0 गर्ल्स डिग्री कालिज, शिकोहाबाद
ईमेलः mayagupta436@gmail.com

सांराश

सामुद्रिक क्षेत्रों की सुरक्षा की आवश्यकता कोई नवीन घटना नहीं है, यह तो पाश्चात्य काल से ही प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय आवश्यकता में शामिल रहा है। बिट्रिश साम्राज्य की सफलता का प्रमुख श्रेय उसकी सामुदिक क्षेत्रों पर सफलता की ही कहानी थी। आज भी यह क्षेत्र प्रमुखता से नवीन विश्व व्यवस्था को प्रभावित कर रहा हैं। भारत के समस्त सामुदिक सुरक्षा की पूर्ति के लिए पूर्वी देशों के साथ सम्बंध स्थापित करना जरुरत भी और आवश्कता भी। जब एशिया की दो प्रमुख महाशक्तियां इस क्षेत्र में गतिशील हो तो भारत के द्वारा अपने क्षेत्रों की सुरक्षा को सर्वोपरि रखना जरुरत भी है और समीचीन भी, इस तरह हिन्द महासागर में चीन के प्रवेश ने पृष्ठभूमि तैयार की है जो भारत के समक्ष सुरक्षा व मित्रता (पूर्वी देशो के साथ) दोनो की ही आवश्यकता उत्पन्न हो गई है। जिसनें भारत के लुक ईस्ट पालिसी को 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' के रुप में बदलाव के लिए जिम्मेदार है।

प्रस्तावना

राष्ट्रीय हित का महत्वपूर्ण केन्द्र सामुदिक क्षेत्र का बनना वर्तमान की प्रमुख घटना है। लोगों के आर्थिक और सामाजिक कल्याण तथा दूसरे देशों के साथ व्यापारिक सम्बंधों के साथ व्यापाकि सम्बंधो के अवसरों को बढ़ाना और सांस्कृतिक संपत्तियों के प्रचार के द्धारा ही इस क्षेत्र का विकास संम्भव है। विदेश नीति के एक यंत्र के रुप में सामुदिक सुरक्षा व संम्प्रभुता को प्रत्येक राष्ट्र अपने प्राथमिक राष्ट्रीय हितों की श्रेणी में रखता है। दूसरे देशों के साथ लाभदायक व्यापारिक रिश्तों के अवसरों को बढ़ाना और सांस्कृतिक सम्पत्तियों के प्रचार के द्वारा भारत अपनी मृदुल शाक्ति (साफट पावर) का दोहन करना भी इसी रणनीति का हिस्सा है। यघपि राष्ट्रीय हित कभी भी स्थायी नही होता यह समय व परिस्थिति के अनुसार बदलता रहता है।

विश्व व्यवस्था में हो रहे परिवर्तन से पूरा विश्व प्रभावित होता है। नेपोलियन ने एक बार कहा था कि कोई भी देश वहाँ स्थित ईट या पत्थरों से नही बनता वह तो उस देश के मनुष्यों के व्यवहार से निशचित होता है।

नेहरु काल में पूर्वी एशियाई देशों के साथ सम्बंध

दक्षिण पूर्वी देशों के साथ भारत के ऐतिहासिक व सांस्कृतिक रिश्ते रहे हैं। 1947 में श्री जवाहर लाल नेहरु ने कहा था कि भारत एक ऐसी जगह स्थित है। जहां से वह पूर्वी एशिया के चौराहे पर एक नेता के रुप में कार्य कर सकता है। लगभग 2000 वर्षों से भी पुराना सम्बंध पूर्वी

एशिया के साथ भारत का रहा है वही वर्ष 2001 में श्री अटल बिहारी वाजपेयी के हनोई यात्रा के समय वियतनाम के साथ रक्षा सहयोग पर समझौता हमारे इस सम्बंधो की व्यख्या करते हैं। वियतनाम के साथ भारत के सम्बंध हर युग में सकारात्मक रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के स्थाई सदस्य के रुप में वियतनाम का हमेशा ही समर्थन किया है। परन्तु भारत का इस क्षेत्र में उपस्थिति चीन को पसंद नही आता है।

जब भारत इस क्षेत्र में किसी गतिविधि को गति देता है, तो यह बीजिंग के लिए चिंता का सबब बन जाता है। बीजिंग का खुले रुप में भारत का विरोध किया जाता हैं, इस क्षेत्र में दिल्ली का प्रवेश कोई बदले की रणनीति नही है ना ही बीजिंग को दबाब में रखने की रणनीति है। भारत की अपनी आवश्यकतायें अन्तराष्ट्रीय जरुरतें हैं, जिन्हें लेकर इस क्षेत्र में सक्रिय है। यद्यपि वर्तमान व्यवस्था में एक सक्षम राजनीति (श्री नरेन्द्र दास दामोदर मोदी) प्रशासक के रुप में कार्यरत हैं। फिर भी आर्थिक व व्यापारिक आवश्कताओं को लेकर नई दिल्ली व बीजिंग आमने सामने है। पिछले दशक में बड़ी ही मात्रा में विकास के साथ भारत बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में एक आर्थिक शक्ति के रुप में उभरा है। बल्कि पूरी दुनिया में एक बड़ी आर्थिक शक्ति के रुप में काफी तेजी से विकास कर रहा है। पूर्वी एशिया दुनिया के बड़ी आबादी वाला देश और तेजी से विकसित होता क्षेत्र है। यह क्षेत्र उच्च प्रोद्योगिकी और तेजी से बढती अर्थव्यवस्था के लिए जाने जाते हैं। सिंगापुर, हांगकांग, दक्षिणी कोरिया और ताईवान तेजी से आगे बढ़ रहे हैं, जो व्यापार के लिए प्रसिद्ध होते जा रहे हैं। इन क्षेत्रों में भारत का प्रवेश उनकी जरुरत भी है और आवश्यकता भी। भारत एक उभरती अर्थव्यवस्था है, जो अपनी प्रतिव्यक्ति आय को बढ़ाने के लिए सदैव तत्पर है, विकास के लिए रोजगार सृजन की आवश्यकता है।

एक्ट ईस्ट पॉलिसी का भविष्य

एक्ट ईस्ट पॉलिसी से पहले निर्धारित 1991 मे लुक ईस्ट पॉलिसी जिसने पूर्वी एशियाई देशों के साथ सम्बंधो का वह गति नही दे पायी जो आवश्यकता थी। भारत का जापान के साथ सम्बंध दूरगामी आर्थिक और राजनितिक साझेदारी की झमता का नींव स्थापित करता है। जापान ने प्रौद्योगिकी में काफी प्रगति की है जबकि मानव संपदा हमारी विशेषता है। यदि दोनों देश एक दूसरे की जरुरतों को समझें तो विकास के पथ पर अग्रसर होना आसान होगा। वही चीन के साथ भारत के सम्बंध संदेहास्प्रद तो है, परन्तु व्यापारिक सम्बंध उतने ही गतिशील हैं। फिर भी अंतर्राष्ट्रीय सम्बंधो को गति देना व सम्बंध बनाये रखना समकालीन जरुरत है। यद्यपि भारत का हिंद महासागर में बडी चुनौती दे पाना व अंडमान पर नई कमांड की उपस्थिति भारत के पूर्वी एशियाई देशों के साथ सम्बंधों की एक कडी हैं। भारत दक्षिणी पूर्वी एशियाई देशों के साथ किसी विशिष्ट विवाद से नही जुड़ा है। यद्यपि भारत इनके मध्य संतुलनकारी देश के रुप मे खडा है। बीजिंग व नई दिल्ली के मध्य सम्बंधो को पुनः परिभाषित करने की आवश्यकता है। एशिया क्षेत्र में भारत की अपनी साफ सुथरी छवि है। जिसे भूमि विस्तार की लालसा है और नही किसी देश पर आक्रमण की इच्छा। भारत एक शांतिप्रिय देंश है जो जियो और जीने दो की नीतियों पर चलने वाला देश है।

इससे भी आगे भारत का पूर्वी एशियाई देशों के साथ सम्बंध बहुआयामी है। जिसकें यहा परम्परागत चुनैतियों के दायरे से लेकर गैर परम्परागत क्षेत्रों तक फैला है। वास्तव में वर्तमान समय में पूर्वी एशियाई के विकास का नक्शा केवल चीन और भारत के लिये ही नही बल्कि यह पूरे

इलाके के विकास का परिणाम है। परिणाम के आधार पर वैश्विक मामलों मे गम्भीरता बढना आवश्यक है, क्योकि इस क्षेत्र के विकास से पूरा विश्व प्रभावित होगा। एक्ट ईस्ट पांलिसी के घेरे में नई दिल्ली को जापान और ऑस्ट्रेलिया को महत्वपूर्ण स्थान देना होगा। क्योकि इनके साथ पूर्वी एशियाई देशों के सम्बंध को अनदेखा नही किया जा सकता है। क्योकि बौद्ध धर्म के जरिये इसके सदियों पुरानी व्यापार और धार्मिक, सांस्कृतिक और सभ्यागत सम्बंध रहे हैं। पूर्वी एशियाई देशों के साथ सम्बंधो का नवीनीकरण आवश्यक है। जिसे विस्तारित करने की आवश्यकता है, जिससे समुन्द्री क्षेत्रों में बिमस्टेक हिन्द महासागरीय रिम जैंसे क्षेत्रीय संगठनो को गति दिया जा सके। साथ ही आसियान में भारत को महत्वपूर्ण राजनीतिक साझीदार के रुप अपनी भूमिका को पुनः परिभाषित करने की आवश्कता है, जिससे विश्व संरचना को गति दिया जा सके।

वर्तमान विश्व व्यवस्था में आर्थिक सम्बंध दूसरे रिश्तों पर भारी पड़ रहे हैं। दो दशको से भारत ने तेजी से अपनी क्षमता में विस्तार किया जिसके कारण वह एशिया की प्रमुख शाक्ति के रूप में उभरा है, साथ ही ये कहना अतिशोक्ति नहीं होगा कि इस दौर में विकास की नवीन गाथा को लिखा जा रहा है। पूर्वी एशियाई देशों के साथ भारत के सम्बंध रणनीतिक साझेदारी व तालमेल की मिसाल प्रस्तुत कर रहा है। भारत ने रणनीतिक स्तर पर बदलाव करते हुए लुक ईस्ट से एक्ट ईस्ट की ओर अग्रसर हो चुका है। इंडोपैसिफिक जैसे शब्दों का प्रयोग वर्तमान समय के लिए भारतीय परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण हैं। क्योकि हिंद महासागर की महत्ता पर गम्भीरता से फोकस करने की जरूरत हैं।

एशिया के दो महत्तवपूर्ण देश भारत व चीन इस क्षेत्र के आर्थिक, व्यापारिक व रणनीतिक उपादेयता को नकार नहीं सकते हैं, न ही इसकी अनदेखी कर सकते हैं। इसलिए पूर्वी एशियाई देश जिनमें जापान, चीन देश सम्मिलित है। भारत इन देशों के साथ अपने सम्बंधो को एक नई ऊँचाई पर ले जा रहा है। जो समकालीन आवश्यकता भी है और जरुरत भी। पूर्वी एशियाई तालमेल का भारत के विकास व सम्बंधो को प्रभावित कर रहा है। इसकी हम चर्चा करेंगे जो कि महत्तवपूर्ण हैं।

जापान और भारत

भारत व जापान के मध्य वैश्विक साझेदारी को 2000 वर्ष में प्रारम्भ किया गया जबकि दोनो देशों के मध्य सम्बंध 1991 में गंभीर हो गये थे। क्योंकि भारत को आर्थिक संकट से उबरने में जापान ने उनकी काफी मदद की थी। भारत व जापान के मध्य सम्बंध रक्षा, समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद, ऊर्जा सुरक्षा जो कि आपसी तालमेल को जीवंत रखते है। भारत के आठ प्रतिशत एफडीआई को पूर्ण जापान करता है। दोनों देश समुद्री क्षेत्रों की सुरक्षा निवेश मे बढोत्तरी के साथ ही बंदगाह, सड़क, रेल और पाइपलाइन के ढांचेगत व्यवस्था कों भी आगे बढ़ा रहे है। हालांकि म्यांमार दक्षिण पूर्व एशिया व जापान के साथ भारत को जोड़ने मे कार्यगार साबित होगा। पश्चिमी पैसिफिक में भारत और जापान नेवी ने संयुक्त अभ्यास किया है। हिन्द महासागर क्षेत्र में यह अभ्यास काफी महत्व रखता है। जो इनकी रक्षात्मक व सुरक्षात्मक संबंधों को गति प्रदान करता है। समीचीन भारत में काम करने वाली जापानी कंपनियों में वृद्धि हुई। संबंधो के उतार– चढाव के साथ ही एक फैक्टर है जो दो देशों को जोड़े रहता है वह है – चीन के साथ संबंधों मे जापान के साथ लगातार द्वीपों को लेकर विवाद की स्थिति बनी रहती है। जिसके कारण उनके आपसी सम्बंध उस सीमा तक नही पहुँच पाते है, जहां तक भारत व जापान के बने हुए हैं।

भारत और चीन

भारत और चीन के मध्य सहयोग का संबंध यदि सदियों पुराना हो तो संघर्ष भी नवीन नहीं हैं। पंचशील समझौते ने 'हिंन्दी चीनी भाई भाई' के नारे ने जो सहयोग व प्रेम को गति दी थी, वही 1962 के चीन आक्रमण उसे रोक दिया वही वर्ष (2014) में सितम्बर में शी जिनपिंग ने भारत का दौरा किया जिसने संबंधो को नवीन ऊर्जा का संचार कर दिया, परंतु रणनीतिक रुप से आपसी प्रतिहंदिता पर विराम नहीं लग पाया है। भारत के समक्ष नई प्रतिहंदिता का क्षेत्र हिन्द महासागर क्षेत्र जो अभी सुर्खियों में है, की अनदेखी नहीं कर सकता है। क्योंकि भारत चीन के मध्य सीमा विवाद तो महत्वपूर्ण है। परन्तु भारत तीन ओर से हिन्द महासागर से जुड़ा है। जो व्यापारिक रीढ़ (मेरुदंड) है। जिसकी अवहेलना मुश्किल है। कुछ वर्षों में व्यापारिक परिस्थितियां काफी तेजी से बदली है। विश्व अर्थप्रधान हो गया है, पूजीवादी व्यवस्था अपने चरम पर है।

पुराने सिल्क मार्ग को पुर्नजीवित कर उसे नए समुंद्री मार्ग से जोड़ने के प्रति बीजिग गंभीर है जो दक्षिण पूर्व एशिया, दक्षिण एशिया और अफ्रीका से होकर गुजरेगी । यह एक नेटवर्क होगा जो आर्थिक केन्द्रों को जोड़ने का कार्य करेगा। इसी परिप्रेक्ष्य में चीन ने भारत के पड़ोसी राष्ट्रों के साथ समझौते (String of Pearl) 'मोतियों की माला' की संज्ञा दी जाती है। भारत के पड़ोसियों से संबंध चीन के नजरिये से व्यापार तक सीमित है। जबकि भारत के नजरिये से यह सम्बन्ध रणनीतिक, सुरक्षात्मक व दबाव में रखने की रणनीतिक का हिस्सा है।

लुक ईस्ट एक्ट में परिवर्तन

विश्व शक्ति बनने की होड़ ने एशिया–प्रशांत क्षेत्र के देशों विशेषकर भारत व चीन को प्रमुख प्रतिद्वंद्वी बना दिया है। विश्वस्तर पर चीन अपना प्रमुख प्रतिद्वंद्वी अमेरिका को मानता है जबकि क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्वी के रूप में भारत को देखता है। अगले 15 से 20 वर्षों में चीन अपने को व्यापक शक्ति के रूप में विकसित करने हेतु अवसरों की खिडकी के रूप इस क्षेत्र को देखता है। (Indo-Pacific Region)। एशियाई क्षेत्र में भारत के राजनीतिक व आर्थिक विकास को खुली आँखों से निगरानी में रखता है। पूर्वी एशियाई देश भारत के लिए अति महत्वपूर्ण है। भारत आसियान संबंध बहुपक्षीय व महत्तवपूर्ण मोड पर आगे बढ रहा हैं। भारत का 20 फीसदी निर्यात और 25 फीसदी आयात इन्ही पर निर्भर है। जो इस क्षेत्र के रणनीतिक संबंधो के लिए अति अति आवश्यक हैं। एक्ट ईस्ट पांलिसी आर्थिक सुधारो के साथ भारत फिर निर्माण हो रही विदेश नीति से जुड़ा गया है।

इस पेपर के द्धारा यह व्याख्यायित किया गया कि पूर्वी एशियाई देशों के साथ भारत का सम्बंध कितना जरुरी है। तथा इन देशों के साथ सम्बंधो गति देते हुए भारत कैसे अपनी नीतियो मे बदलाव करता है। और सम्बंधो को आगे बढाते हुए नयी दिशा प्रदान करता है। और इस निष्कर्षों पर पंहुचते है कि भारत को संघर्षो को दरकिनार करके अपने प्राथमिकताओं को निर्धारित करना होगा, जिससे राष्ट्रीय हितों के आधार पर अपनी विदेश नीति को आगे बढाया जाये। वैश्विक परिप्रेक्ष्य मे विकास को गति दिया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ

1. Sikri, Rajiv (2009) India's *'Look East Policy'* Asia Pacific Review, 6(1) pg.**131-45**.
2. Thakur ,Ramesh,(1992) India after Non Alignment, Foregin Affains ,71 (2) pg **165-82.**

2. Ganguly, Sumit,(2003*); India's Foreign Policy Grows up,* world Policy Journal, 20(4),pg -**41-47**.
2. Merchant, Minhaj, (2011); *A New world order*, The times of India, Allahabad , Dec.10, pg- **14**.
2. Darrat, A. (1987) *" Are export an engine of Growth ? another Look at the Evidence",* Applied Economics, 1987, pg **– 277 – 83.**
2. Kim , Jong – II and Lawrence J. Lau. 1994 The source of Economics Growth of the East Asian Newly Industrialized countries, Journal of the Japanese and International Economics vol.8 pg. **235-271**.

वेबसाइट :-

i. www.china.org.cn/government/whitepaper/2009- 01/21/content_17162792.htm.
ii. www.fmprc.gov.cn/eng/zxxx/t929482.htm.
iii. www.ipcs.org/article/navy/strstegic-shift in chinese naval_strategy.in Indian ocean.1899html
iv. www.tandfonline.com/doi/pdf/10.1080/09733159.2011.641381
v. www.ignca.nic.in/ks_41064.htm.
vi. www.maritimeindia.org/pdfs/SMenon.pdf